श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।

वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

एन् एस् शठकोपाचार्य कृतं

॥ श्रीशौरिराज करावलम्बस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font. Our sincere thanks to Sri. Sundar Varadarajan of California for proofreading this document.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्रीशौरिराज करावलम्बस्तोत्रम् ॥

श्रीनीलमेघ सुमनोहर दिव्यमूर्ते
सर्वाङ्गसुन्दरविभो वरपुष्कराक्ष।
लोकैकनायक परात्पर पुण्यकीर्ते
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ १॥

लक्ष्मीश देव यदुनाथ महीश विष्णो
गोदासमेत गरुडासन शेषतल्प।
वेदान्तवेद्य निजवैभव विश्वमूर्ते
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ २॥

श्रीपद्मिनीप्रणयवल्लभ पङ्कजाक्ष
श्रीपञ्चकृष्णवननायक पञ्चवेर।
श्रीमन्त्ररत्नसकलाक्षरसिद्धिदायिन्
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ३॥

श्रीनारदादिमुनिपुङ्गवपूजिताङ्घ्रे
नारायणाच्युत हरे प्रणतार्तिहारिन्।
ब्रह्मेशशक्रमुख संस्तुत सद्गुणौघ
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ४॥

कासारभूत महदाह्वय विष्णुचित्त-
श्रीभक्तिसार कुलशेखर पाणविप्रैः।
श्रीमच्छठारि परकालमुखैश्च वन्द्य
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ५॥

श्रीनाथयोगि कमलेक्षण राममिश्र-
श्रीयामुनेय वरपूर्णनुतप्रभाव।

www.prapatti.com

श्री लक्ष्मणार्य यतिवर्य मुखैस्तुतस्त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ६॥

श्रीमीन कूर्म वरलोक नृसिंहवर्णिन्
श्रीजामदग्न्य रघुवीर हलाढ्य कृष्ण।
श्रीकल्किरूप कलिमर्दन कालमेघ
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ७॥

वैशाखमास महदुत्सव तुष्टचित्त
माघोत्सवे वरसमुद्रतटे विहारिन्।
आन्दोलिकादि सुखयान गति प्रहृष्ट
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ८॥

भक्तं मुनेयधरमात्मगुणैः प्रपूर्णं
संशोद्ध्य तत्सहचरीकृत मुद्गशालिम्।
स्वीकृत्य चार्धनिशि नित्यपदं ददौ त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ९॥

श्रीशङ्खचक्रवरदानगदात्तपाणे
सद्भक्तभट्टपरिपालनजागरूक।
श्रीचोलराजपुरतो धृतकेशपाश
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ १०॥

दर्शे विभीषणवचः कृतवान् भवान्नु
श्रीरङ्गराजगतिभेदमधास्तदर्थम्।
भक्तप्रियश्च भवलुण्ठन कोविदस्त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ ११॥

अर्केन्दु भौम बुधजीव कवीश सौरि-
भास्वत्किरीट मणिराजित पादपद्म।
अष्टाक्षरैक मनुरत्न कृतात्मरूप
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ १२॥

प्रत्यग्रपापप्रचुरार्दित जीवनस्य
अज्ञानिनश्च ममतामदविह्वलस्य।
कल्याणरूप कमनीय गुणार्णवस्त्वं
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ १३॥

नित्यापराधचकितस्य नितान्तदुःख-
कृत्यापचारशतदष्टहृदन्तरस्य।
धर्मादपेत चरितस्य भयाकुलस्य
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ १४॥

संसार जालपतितस्य झषोपमस्य
सद्भक्त धीवरसुता सहितस्त्वमद्य।
दुष्कर्मघर्मजनिभीत्यभिपीडितस्य
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ १५॥

पाशैस्सदा यमभटा बहु तर्जयन्ति
क्षेप्तुं च मां हि नरके नरकान्तकस्त्वम्।
प्राणप्रयाण समये च तदा प्रसन्नः
श्री शौरिराज मम देहि करावलम्बम्॥ १६॥

॥ इति श्रीशौरिराज करावलम्बस्तोत्रं समाप्तम्॥

www.prapatti.com